अमर उजाला
गोरखपुर | शनिवार, 30 सितंबर 2023

'फास्ट फूड स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक'

वक्ता बोले-भारतीय भोजन से ही स्वस्थ भारत का सपना होगा साकार

गोरखनाथ मंदिर में आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन कमलनाथ, प्रो. यूपी सिंह, आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, ब्रह्मचारी दासलाल, महंत शिवनाथ, डॉ. मंजूनाथ व अन्य। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ व महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि के अवसर पर साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतर्गत 'आयुर्वेद-संपूर्ण आरोग्यता' संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के तीसरे दिन आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति एके सिंह ने कहा कि भारत में हजारों वर्षों पूर्व से आयुष चिकित्सा पद्धति सफलतापूर्वक चलाई जा रही है।

आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण करने के साथ ही रोगी के उपचार की विधि बताता है। उन्होंने कहा कि एक अध्ययन में पूरे विश्व में भारतीय थाली सर्वश्रेष्ठ और पौष्टिकता युक्त बताई गई है। आज हम फास्ट फूड के अभ्यस्त हो रहे हैं। यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। हमें पुनः अपनी भारतीय थाली पर निर्भर होना पड़ेगा, तभी हमारा स्वस्थ भारत का संकल्प सिद्ध होगा।

सवाई आगरा से पधारे ब्रह्मचारी दासलाल ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है। माना जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि करने के पश्चात जीवों को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद का ज्ञान प्रदान किया था। हमारे शरीर में वात, पित्त और कफ त्रिदोष होते हैं। इनको अपने आहार-विहार से समान रखने से रोग नहीं होते हैं। उड़ीसा से पधारे महंत शिवनाथ ने कहा कि आसन, प्राणायाम और संतुलित दिनचर्या स्वस्थ रहने के सबसे उपयोगी साधन हैं। आयुर्वेद से शरीर स्वस्थ होता है तो योग से मन स्वस्थ और शांत होता है।

गुरु गोरखनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान सोनबरसा के प्रधानाचार्य डॉ. मंजूनाथ ने कहा कि स्वस्थ्य का स्वास्थ्य रक्षण करना ही आयुर्वेद है। आयुर्वेद में पंचकर्म का वर्णन है। इससे विभिन्न रोगों का इलाज किया जाता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष व पूर्व कुलपति प्रो. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है। यह पूर्णतया प्राकृतिक और आध्यात्मिक है।

सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है : कृष्णचंद्र शास्त्री

गोरखपुर। सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है। इस धर्म के चार स्तंभ हैं। हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख। इन चारों में कोई भेद नहीं है। ये सनातन संस्कृति को मानने वाले हैं। ये बातें कथाव्यास कृष्णचंद्र शास्त्री ने कहीं। वह ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ व महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि के अवसर गोरखनाथ मंदिर परिसर में आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के चौथे दिन श्रद्धालुओं को भागवत कथा का रसपान करा रहे थे।

व्यासपीठ की आरती करते प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ। संवाद

कथाव्यास कृष्णचंद्र शास्त्री ने कहा कि भगवान बुद्ध हों, भगवान महावीर हों या गुरु नानक देव, सभी भगवान विष्णु ही हैं। सब उन्हीं की भक्ति करते हैं। दुनिया के सभी पापों का सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित यदि कोई है तो वह है भगवान की भक्ति। जीव की जितनी क्षमता पाप करने की है, उससे अनंत गुना क्षमता भगवान के नाम में पाप को नष्ट करने की है।

बताया कि जीवन भर पाप करने वाले अजामिल ने मृत्यु समीप होने पर भगवान के नाम वाले अपने पुत्र को बुलाया। जैसे ही उसने नारायण का नाम लिया उसके लिए बैकुंठ के द्वार खुल गए।

बताया कि साधु वही होता है जो सभी बिगड़े लोगों को सुधार देता है। हमारे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री साधु हैं। इसलिए वह प्रदेश के दुष्टों को सुधारने का कार्य कर रहे हैं।

कथा व्यास ने कहा कि हमें अपने बच्चों का नाम भगवान के नाम से मिलता-जुलता रखना चाहिए। बताया कि जहां योगी जन का मन रमण करता है, वही राम है। यह इक्कीसवीं सदी सनातन धर्म का समय है।

भगवान राम की कथा सुने बिना, भगवान कृष्ण की कथा नहीं सुनते। इसलिए भागवत में पहले स्कंध में राम कथा सुनाकर शुकदेव जी राजा परीक्षित को भगवान श्रीकृष्ण की कथा में प्रवेश कराते हैं। संवाद